P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-10* June- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जनपद प्रतापगढ़ में कृषि आधारित उद्योगों की सम्भावनाएँ– एक भौगोलिक अध्ययन

Prospects of Agro-Based Industries In District Pratapgarh - A Geographical Study

Paper Submission: 08/05/2020, Date of Acceptance: 19/05/2020, Date of Publication: 00/00/2020

दुर्गा प्रसाद मिश्र
शोध छात्र,
भूगोल विभाग,
डा0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय,
अयोध्या, उ०प्र०, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में कृषि आधारित उद्योगों की सम्भावनाओं पर अध्ययन करके अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण विकास हेतु सुक्षाव प्रस्तुत किए गये हैं। आधारभूत उद्योगों के विकास से ग्रामीण विकास की प्रबल सम्भावनाएँ विद्यमान हैं। अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण विकास के लिए कृषि आधारित उद्योगों की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। कृषिगत उद्योगों का राष्ट्र की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान होता है। कृषिगत उधोग आर्थिक शक्ति के केंद्रीकरण को कम करने के साथ सम्पत्ति एवं आय की असमानताओं को भी कम करने में सहायक होते हैं। औद्योगिक विकास एवं कृषि दोनो एक दूसरे के पूरक हैं तथा प्राथमिक क्षेत्र में विकास होता है तो द्वितीयक क्षेत्र में सृजन की भूमिका तैयार होती है।

जनपद में कृषि से सम्बंधित कच्चे मालों का बाहुल्य होने के बावजूद कृषि पर आधारित उद्योगों का विकास उचित रुप से नहीं हो सका है। यह बड़े उद्योग की दृष्टि से 'उद्योग शून्य' जिला है। यहाँ पर भारी उद्योग का कोई भी कारखाना स्थापित नहीं है। जिसके कारण स्थानीय लोगों में बेरोजगारी बढ़ी है और लोगों को रोजगार के लिए अन्य स्थानों पर पलायन करना पड़ रहा है। यहाँ पर कृषि आधारित उद्योगों का विकास नितान्त आवश्यक है।

In the presented paper, after studying the possibilities of agro-based industries, suggestions have been made for rural development of the study area. There are strong possibilities of rural development with the development of basic industries. The role of agro-based industries is very important for the rural development of the study area. Agricultural industries have an important place in the nation's economy. Agricultural industries are helpful in reducing the centralization of economic power as well as in reducing inequalities of property and income. Industrial development and agriculture are both complementary to each other and if development takes place in the primary sector, then the role of creation is created in the secondary sector.

Despite the abundance of agriculture related raw materials in the district, agriculture-based industries have not been developed properly. It is an 'industry zero' district in terms of big industry. No heavy industry factory is established here. Due to which unemployment has increased among the local people and people have to migrate to other places for employment. Development of agro-based industries is absolutely necessary here.

मुख्य शब्द : कृषि आधारित उद्योग, ग्रामीण विकास, आर्थिक विकास, कृषि उत्पाद, प्रसंस्करण, केन्द्रीयकरण, विपणन, कृषि उत्पाद।

Agro-Based Industries, Rural Development, Economic Development, Agricultural Products, Processing, Centralization, Marketing, Agricultural Products

प्रस्तावना

अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण विकास की सम्भावनाएँ कृषि आधारित उद्योगोंके विकास में ही छुपी हुई हैं। कृषि उद्योगों की जननी एवं मानव जीवन की पोषक रही है। यह आर्थिक विकास की कुंजी मानी जाती है क्योंकि औद्योगीकरण मूल रूप से कृषिगत विकास की ही देन है। कृषि एवं उद्योगों में उचित संतुलन स्थापित किए बिना कोई भी राष्ट्र आर्थिक क्रिया–कलापों का सही

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-10* June- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

संचालन नहीं कर सकता, भले ही वह देश कितना उधोग अभाव के कारण यहाँ पर विकसित होने वाले उधोग–धन्धों में कृषि आश्रित उद्योगों की प्रधानता रही है।

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र जनपद प्रतापगढ़ गंगा के मैदानी भाग में स्थित है। जनपद प्रतापगढ़ उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद मण्डल के अन्तर्गत आता है। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 3717 वर्ग किमी० है। जनपद में पाँच प्रधान क्यों न हो। खनिज एव शक्ति के साधनों के तहसील एवं 17 विकासखण्ड हैं। अध्ययन क्षेत्र का सम्पूर्ण भू–भाग गंगा एवं सई की सहायक नदियों की उपज है। जनगणना 2011 के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 3209141 है। कृषि में लगे कर्मकारों का कुल मुख्य कर्मकारों से प्रतिशत 63.74% है।जनपद की दो तिहाई से अधिक जनसँख्या कृषि कार्यों में लगी हुई है।

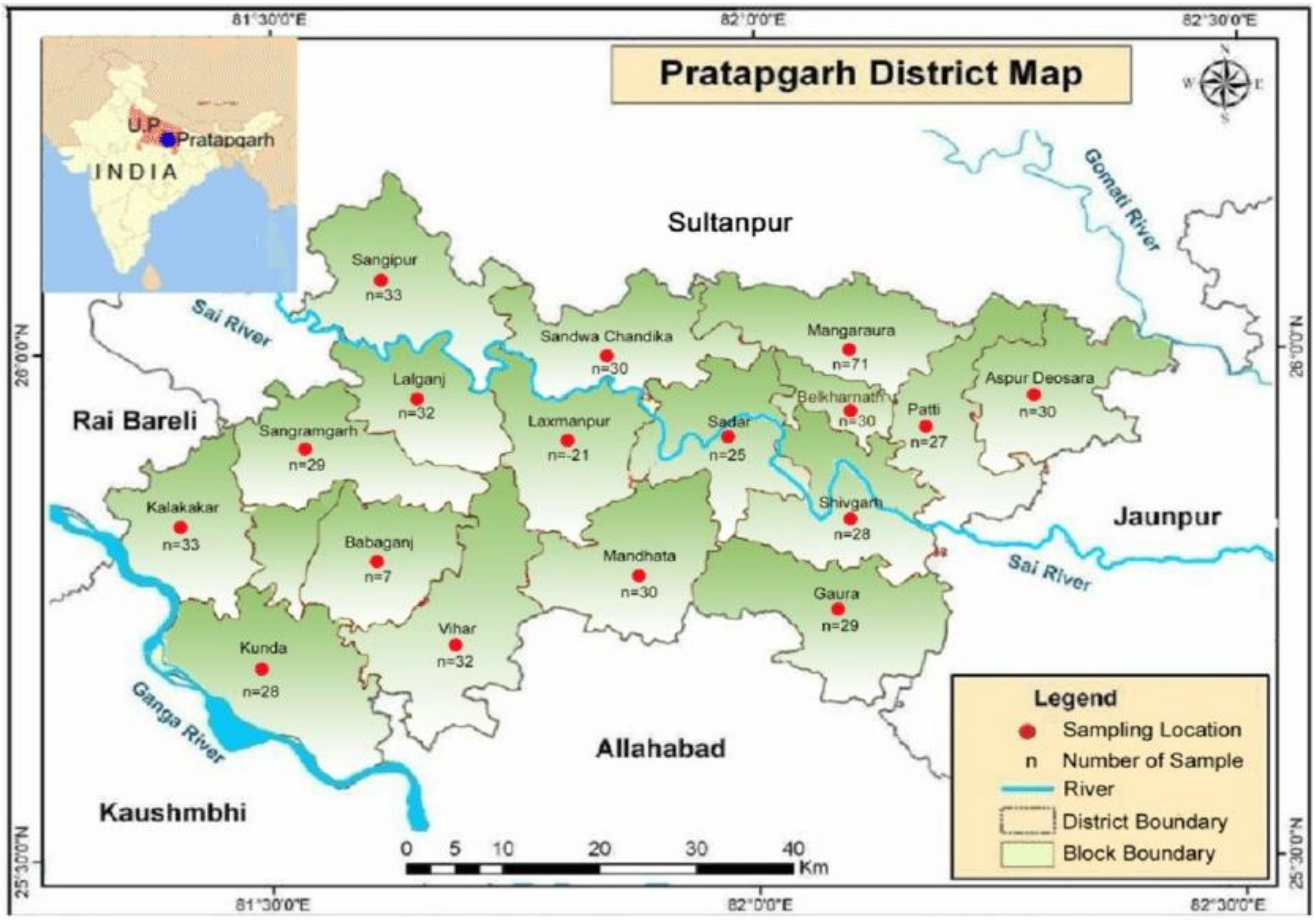

अध्ययन का उद्देश्य

1. अध्ययन क्षेत्र में कृषि आधारित उद्योगों की विशेषताओं का मूल्यांकन करना ।
2. आधारभूत सुविधाएँ प्राप्त होने के बावजूद कृषि आधारित उद्योगों के न विकसित होने के कारणों का पता लगाना।
3. कृषि आधारित उद्योगों का ग्रामीण जीवन एवं विविध क्रिया–कलापों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
4. कृषि आधारित उद्योगों का भौगोलिक पर्यावरण, कच्चा माल, रोजगार तथा बाजार से सम्बन्धित तथ्यों को परिलक्षित करना।
5. कृषि आधारित नये उद्योगों की पहचान कराना।

परिकल्पनाएँ

1. कृषि आधारित उद्योग ग्रामीण विकास के आधारभूत स्तम्भ हैं।
2. कृषि आधारित उद्योग कृषि विकास का पर्याय है।
3. कृषि आधारित उद्योगों में ग्रामीण जनसंख्या के नियोजन की पर्याप्त संभावनाएँ विद्यमान हैं।
4. ग्रामीण विकास में कृषि आधारित उद्योगों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

अनुसंधान विधि

प्रस्तुत अध्ययन, क्षेत्र के सर्वेक्षण पर आधारित है। सम्पूर्ण जनपद का प्रतिनिधित्व हो सके, इसलिए दैव निदर्शन विधि (Random Sampling Method) से जनपद के पाँचों तहसीलों में से प्रत्येक तहसील से दो–दो गांवों का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध में प्राथमिक आँकड़े और जनपद के विभिन्न कार्यालयों जैसे कृषि विभाग, जिला उद्योग केंद्र, उद्यान एवं फल संरक्षण, ऊसर सुधार विभाग, पेयजल एवं सिंचाई विभाग तथा सनई अनुसंधान संस्थान आदि के आँकड़े आधार बनाएँ गए हैं।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-10* June- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जनपद प्रतापगढ़ में कृषि आधारित उद्योग

कृषि आधारित उद्योगोंकी भारत के आर्थिक विकास में अहम भूमिका रही है। कृषि क्षेत्र के विकास तथा ग्रामीण क्षेत्र के सामाजिक उत्थान में इनकी महत्वपूर्ण उपयोगिता है। यैसे उधोग जो कृषि के उत्पादन पर आश्रित होते हैं, उन्हे कृषि आधारित उद्योग कहा जाता है। विविध कृषि उत्पाद अपने मूल रूप में उपभोग योग्य नही होते हैं। प्रक्रिया करने के बाद ही उनका उपयोग किया जा सकता है। अनाज प्रक्रिया क्षेत्र में धान से चावल तैयार करना, गेहूँ से आटा तैयार करना, दलहन से दाल तैयार करना आदि मुख्य क्रियाएँ हैं। इसी प्रकार जौ, बाजरा एवं तिलहन आदि के प्रसंस्कृत नवीन उत्पाद के प्रति लोगों की रुचि बढ़ी है।

जनपद में ग्रामीण एव घरेलू उद्योग–धंधे जिसमें हैंडलूम, तेलघानी, लकडी के सामान, वर्तन बनाने, गुड़ एव खाण्ड्सारी, दरी एवं कालीन बुनाई, चूना भट्टी, साबुन बनाने, बांस के टोकरे बनाने जैसे वस्तुओं एव आँवला के उत्पादोंका अधिकाधिक मात्रा में उत्पादन का कार्य होता है।

जनपद प्रतापगढ़ में कृषि आधारित औद्योगिक इकाइयों का विवरण

क्रम संख्या	इकाई का नाम	विकासखण्ड	उत्पादन का नाम
1.	पुष्पांजलि ग्रामोद्योग सेवा समिति	सदर	मुरब्बा, आचार, कैन्डी
2.	खंडेलवाल फ्रूट प्रोडक्ट	सदर	मुरब्बा, आचार,जैम
3.	इण्डिका फ्रूट प्रोडक्ट	सदर	मुरब्बा, लड्डू, वर्फी
4.	मे० संतोष तेल उद्योग	सांगीपुर	सरसों तेल
5.	गुप्ता आँयल मिल	सदर	सरसों तेल
6.	मौर्या राईस मिल	सदर	चावल
7.	मे० धान कुटाई सहकारी समिति	शिवगढ	चावल
8.	मे० छैल बिहारी चूरा उधोग	मान्धाता	चूराध्राइस
9.	मे० बाबू लाल मोहन लाल	सदर	दालमिल
10.	कारपेट उद्योग	लक्ष्मणपुर	कारपेट
11.	मे० उपाध्याय आटा चक्की उद्योग	कुंडा	आटा चक्की
12.	श्रीराम कालीन उद्योग	बिहार	कारपेट

स्रोत – महाप्रबन्धक, जिला उद्योग केंद्र, प्रतापगढ़।

जनपद की पृष्टिभूमि कृषि से सम्बंधित है। यहाँ पर कृषि आधारित उद्योगों के विकसित होने की प्रबल सम्भावनाएँ विधमान हैं। कृषि आधारित अन्य उद्योगों के साथ आँवला प्रसंस्करण उद्योग को बढ़ावा दिया जा सकता है। क्योंकि जनपद में काफी अधिक मात्रा में आँवला का उत्पादन होता है । यहाँ पर्याप्त मात्रा में आँवला के उत्पादन होने के कारण जनपद प्रतापगढ़ को "आँवलानगरी " के नाम से जाना जाता है।

औद्यानिक फसलें

औद्यानिक फसलों में सब्जियों की फसलें, आलू एवं अन्य कन्दीय फसलें, फल वाली फसलें, मसाले एवं बागवानी फसलें आदि सम्मिलित हैं। अध्ययन क्षेत्र में चावल, गेहूँ, दलहन, तिलहन, फलों एवं सब्जियों की खेती व्यावसायिक उद्देश्य के लिए की जाती है। कुण्डा व लालगंज तहसील में प्रसिद्ध दशहरी आम एवं केले की बागवानी के साथ–साथ पिपरमेंट (मेंथा) की खेती होती है। इस क्षेत्र से जुड़ी औद्योगिक इकाइयों के स्थापना की प्रचुर सम्भावनाएँ विद्यमान हैं।

औद्योगिक इकाइयाँ

जनपद में आँवला प्रसंस्करण एवं छोटे स्तर की कई घरेलू औद्योगिक इकाइयाँ कार्यशील हैं। उनको निम्न तालिका में प्रदर्शित किया गया है–

जनपद में पंजीकृत कारखाने, लघु औद्योगिक इकाइयाँ, खादी ग्रामोद्योग इकाइयाँ एवं उनमें कार्यरत व्यक्ति

विकासखण्ड		पंजीकृत कारखाने		लघु औद्योगिक इकाइयाँ		खादी ग्रामोद्योग इकाइयाँ	
		कारखानों की संख्या	कार्यरत व्यक्ति	इकाइयों की संख्या	कार्य–रत व्यक्ति	इकाइयों की संख्या	कार्य–रत व्यक्ति
1.	कालाकांकर	0	0	105	210	1	40
2.	बाबागंज	0	0	106	212	0	0
3.	कुण्डा	0	0	1450	2920	3	96
4.	बिहार	1	20	120	240	0	0
5.	सांगीपुर	0	0	150	300	0	0
6.	लालगंज	1	19	150	300	0	0
7.	लक्ष्मणपुर	0	0	140	280	0	0
8.	सण्डवा चंद्रिका	0	0	160	320	1	12
9.	सदार	3	20	2055	4136	6	88
10.	मांधाता	0	0	158	316	1	10

11.	मंगरौरा	0	0	20	40	1	32
12.	पट्टी	0	0	465	930	1	28
13.	आसपुर देवसरा	0	0	160	320	1	32
14.	शिवगढ़	0	0	246	492	1	20
15.	गौरा	0	0	140	280	7	176
16.	रामपुर सन्ग्रामगढ़	0	0	150	300	1	32
17.	बाबा बेल्खरनाथ	0	0	50	100	1	40
योग ग्रामीण		5	59	5825	11696	25	606
योग नगरीय		15	250	3490	7020	0	0
योग जनपद		20	309	9315	18716	25	606

स्रोत– जिला खादी एवं ग्रामोद्योग अधिकारी,प्रतापगढ़ उ०प्र०। वर्ष 2018

राइस मिल

चावल जनपद की मुख्य खाद्यान्न फसल है। इसके उत्पादन एवं क्षेत्रफल में भी लगातार तेजी से वृद्दि हुई है। वर्ष 2008 में चावल का कुल क्षेत्रफल 97020 (हे०) एवं कुल उत्पादन 179462 (मी० टन) से बढ़कर वर्ष 2018 में कुल क्षेत्रफल 125108 (हे०) एवं कुल उत्पादन 217030 (मी० टन) हो गया। राइस मिलों में धान की कुटाई से निकली भूसी को बहुपयोगी मशीनों को बेच दिया जाता है जो इसकी पेराई करके तेल निकालती हैं। इस भूसी से अन्य उत्पाद भी निर्मित किये जाते हैं।

आयल मिल

इस उद्योग को ग्रामीण क्षेत्रों में घानी उद्योग के नाम से जाना जाता है। वर्ष 2008 में तिलहन का कुल क्षेत्रफल 2099 (हे०) एवं कुल उत्पादन 1022 (मी० टन) से बढ़कर वर्ष 2018 में कुल क्षेत्रफल 2131 (हे०) एवं कुल उत्पादन 2501 (मी० टन) हो गया। सरसों, अलसी, तिल, महुए एवं नीम के बीज की पेराई प्राय: इस उद्योग में की जाती है। सरसों का तेल प्रमुख खाद्य पदार्थ के रूप में, नीम के तेल का प्रयोग औषधि एवं पेस्टीसाइड के रूप में जबकि महुए के तेल से साबुन एवं वैसलीन बनाया जाता है। इससे सैकड़ों लोगों को स्थानीय रूप से रोजगार प्राप्त है।

फ्लोर मिल

गेंहूँ जनपद की दूसरी प्रमुख खाद्य फसल है। इसके भी उत्पादन एवं क्षेत्रफल में लगातार वृद्दि हुई है। वर्ष 2008 में गेंहूँ का भी कुल क्षेत्रफल (हे०) 145598 एवं कुल उत्पादन 355846 (मी० टन) से बढ़कर वर्ष 2018 में कुल क्षेत्रफल 168495 (हे०) एवं कुल उत्पादन 463731 (मी० टन) हो गया। ग्रामीण क्षेत्रों में छोटी–छोटी चक्कियों से गेंहूँ की पिसाई की जाती है। परन्तु व्यावसायिक रूप से जनपद में बहुत कम फ्लोर मिल की इकाइयाँ कार्यरत है। जनपद में व्यावसायिक रूप से फ्लोर मिल की इकाइयों को स्थापित करने की आवश्यकता है। क्योंकि यहाँ पर बेकरी उद्योग की कई इकाइयाँ कार्यरत हैं। इसके आलावा अन्य उत्पाद के उत्पादन में भी सहायक है।

दाल मिल

जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों द्धारा स्वयं के प्रयोग के भर का दलहनी फसलों से दाल तैयार कर ली जाती है। जनपद में दाल मिल की इकाइयों की पर्याप्त संभावनाएं विद्यमान हैं क्योंकि यहाँ पर दलहनी फसलों का उत्पादन लगातार बढ़ रहा है।

जूट उधोग

ग्रामीण क्षेत्रों में इसके लिए कच्चे माल के रूप में सनई व ढैंचा की खेती की जाती है। जनपद में सनई अनुसन्धान केंद्र की भी स्थापना की गयी है। जनपद में यह उद्योग गृह उद्योग के रूप में विकसित है जिसके भविष्य में कुटीर एवं लघु उद्योग के रूप में विकसित करने की अपार सम्भावनाएं हैं।

आँवला उद्योग

आँवला को अमृतफल के रूप में जाना जाता हैद्य यह पौष्टिक तत्वों से भरपूर एवं स्वास्थ्यवर्धक होता है। प्रतापगढ़ जनपद उत्तर प्रदेश में आँवला का प्रमुख उत्पादक क्षेत्र है। जनपद में आँवला उत्पादन एवं निर्यात की संभावनाओं को मूर्तरूप देने के लिए जिलाधिकारी की अध्यक्षता में 'आँवला मिशन' की स्थापना की गयी है। इस उद्योग को व्यावसायिक रूप देने के साथ ही इसके उत्पादन, विपणन एवं निर्यात की दिशा में शासन एवं जिला प्रशासन द्वारा सतत प्रयास किया जा रहा है। इसे 'एक जिला एक उत्पाद' योजना के तहत भी पहचान मिली है। इस पौधों का रोपण ऊसर भूमि को उर्वरक बनाने, बेकार एवं अनुपजाऊ मृदा को उपजाऊ बनाने में भी उपयोगी है। इसीलिए इसके कृषि क्षेत्र का विस्तार हो रहा है। जनपद में आँवला की कृषि व्यावसायिक कृषि के रूप में ली जाती है। यहाँ से आँवले की सप्लाई डाबर व पतंजलि जैसी बड़ी–बड़ी कम्पनियों को भी की जाती है।

जनपद में आँवला उद्योग की स्थापना के लिए उत्तरदायी कारक निम्नलिखित हैं–

1. कच्चे मॉल की उपलब्धता
2. न्यूनतम यातायात व्यय
3. सस्ते श्रम की उपलब्धता

आँवला द्धारा निर्मित उत्पाद

आँवले के कच्चे व परिपक्व फलों द्धारा विभिन्न प्रकार के गुणवत्ता युक्त एवं स्वास्थ्योपयोगी खाद्य एवं पेय पदार्थ निर्मित किये जाते हैं। जिसमें जैम, मुरब्बा, लड्डू, वर्फी, कैन्डी, अचार, आँवला जूस इत्यादि हैं।

आँवला निर्मित औषधि उत्पादों में च्यवनप्राश, त्रिफला चूर्ण, मधुमेह चूर्ण, त्रिफला लौह आदि हैं।

इसके साथ ही अनेक प्रकार के दैनिक उपयोगी सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री भी निर्मित की जाती है। जिसमें

प्रमुख रूप से आँवला केश तेल, फेश शैम्पू , दन्त मंजन, साबुन, क्रीम इत्यादि।

वर्तमान समय में जनपद में जो औद्योगिक इकाइयाँ संचालित हैं उसमें अधिकांश आँवला उद्योग में कार्यरत हैं जिससे इसके और अधिक विकास की सम्भावनाएं विद्यमान हैं। इससे स्थानीय स्तर पर रोजगार को बढ़ावा मिलनें के साथ ग्रामीण पलायन को भी रोकने में मदद मिलेगी।

सुझाव

अध्ययन क्षेत्र जनपद प्रतापगढ़ में कृषि आधारित उद्योगों के विकास हेतु निम्न आवश्यक सुझाव –

1. अवस्थापनागत सुविधाओं का विस्तार जैसे ग्रामीण सड़कें, ग्रामीण विद्युतीकरण, गोदाम निर्माण, श्रमिकों का प्रशिक्षण सुधार।
2. पर्याप्त वित्त की व्यवस्था।
3. कच्चे माल की आपूर्ति।
4. विपणन की उचित व्यवस्था अर्थात नये विपणन केन्द्रों की स्थापना।
5. खाद्य प्रसंस्कृत पदार्थों की पर्यावरण अनुकूल पैकेजिंग।
6. जनपद के उद्यमियों के आत्मविश्वास में वृद्दि हो।

निष्कर्ष

कृषि आधारित उद्योगों का योगदान अन्य लघु एवं कुटीर उद्योग धंधों की अपेक्षा ग्रामीण रोजगार परक विकास में अधिक महत्वपूर्ण है। ये उद्योग स्थानीय संसाधनों के पूर्ण उपयोग तथा कुछ निश्चित प्रकार के उपभोग योग्य वस्तुओं के उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने की दृष्टि से विशेष उपयोगी हैं। कृषि आधारित उद्योगों को बढ़ावा देकर भूमिहीन कृषि मजदूरों को आत्मनिर्भर बनाने के साथ कृषि पर निर्भरता को कम किया जा सकता है। कृषि आधारित उद्योग घरेलू बाजारों में उपभोक्ताओं की जीवनशैली को भी परिवर्तित कर रहा है। कृषि आधारित उद्योग ग्रामीण क्षेत्रों में कृषकों की आर्थिक दशा सुधारने तथा रोजगार प्रदान करने में सहायक होगा। कृषि आधारित उद्योगों में तीव्र रोजगार उत्पन्न करने की क्षमता है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों को आत्मनिर्भर बनाने के साथ ही 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' की दिशा में महत्वपूर्ण रूप से सहायक होगा। गाँधी जी ने कहा भी है कि 'भारतीय गाँवों की समृद्धि एवं पुनर्निर्माण ग्रामोद्योग के माध्यम से ही सम्भव है।'अतः जनपद प्रतापगढ़ में कृषि आधारित उद्योगों का भविष्य उज्ज्वल है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *तिवारी आर. सी. एवं सिंह बी. एन. दृ 2016 रू कृषि भूगोल, प्रवालिका पब्लिकेशन, इलाहाबाद।*
2. *Mishra J- P- 2001: Geography of India] Agriculture Vidya Sagar] Publication Allahabad-*
3. *Chandra] A-K- ¼1965½; ÞAggro&Industries for welfare of weaker sections-ß*
4. *Mishra R- P- ¼1978½ Regional Planning and National Development] Vikash publication] New Delhi-*
5. *आर. के गोबिल तथा बी. बी. त्रिपाठी (1990)य स्वत्रंत भारत में कृषि विकास, अभ्युदय प्रकाशन, इलाहाबाद।*
6. *कुरुक्षेत्र, मासिक अंक मई 2020*
7. *कुरुक्षेत्र, मासिक अंक जून 2018*
8. *डिस्ट्रिक्ट, गजेटियर , प्रतापगढ़।*
9. *सांख्यिकी पत्रिका जनपद प्रतापगढ़, उ०प्र०।*
10. *जनपदीय विकास पुस्तिका प्रतापगढ़ (प्रकाशन एवं जन सम्पर्क विभाग)*
11. *भारत 2020, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।*